सञ्प्रेषण की कलाएं

ठहराए हुए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कलीसिया के सदस्यों से काम करवाने के लिए कलीसिया के अगुवे अपने अधिकार में किन ढंगों का इस्तेमाल करते हैं ? यह तो स्पष्ट है कि उनका अपना व्यज़्तित्व और चरित्र है अर्थात यदि उनका चरित्र वैसा ही है जैसा होना चाहिए तो कलीसिया के लिए प्रसन्नतापूर्वक उनके अनुसार काम करना आवश्यक है। इसके बावजूद वे किस ढंग का इस्तेमाल कर सकते हैं ? ज़्या वे बल का इस्तेमाल कर सकते हैं ? उनका वेतन रोक सकते हैं ? उन्हें निकाल सकते हैं ? बेशक नहीं। अपने नमूने का बल देने के अलावा, कलीसिया के अगुवे मसीह की कलीसिया की अगुआई के लिए सञ्प्रेषण की अपनी योग्यता का इस्तेमाल ही कर सकते हैं। यदि उनकी संवाद कला अच्छी है, तो कलीसिया एकजुट होकर बढ़ सकती है; यदि संवाद की उनकी कला कमज़ोर है, तो कलीसिया में समस्याएं हो सकती हैं।

कलीसिया के अगुओं को किस प्रकार की सञ्प्रेषण कलाओं की आवश्यकता है ? इस पाठ में तीन कलाओं पर चर्चा की जाएगी: सुनना, चर्चा करना और सार्वजनिक संवाद।

सुनने की कला

कलीसिया के अगुओं के लिए सञ्प्रेषण की कला के लिए सुनने की योग्यता होना आवश्यक है। कई बार कलीसिया के अगुवे यह भूल जाते हैं कि सञ्प्रेषण टू-वे वाली (अर्थात दोतरफा) गली है। वे इसे केवल एक पात्री रूपक के रूप में ही देखते हैं जिसमें वे बोलें और उनके अनुयायी केवल सुनें; वे आज्ञा दें और अनुयायी उनकी आज्ञा मानें।

परन्तु कलीसिया की लीडरशिप या नेतृत्व में यह गुण होना आवश्यक है कि अगुवे अपने अनुयायियों की बात ध्यान से सुनें। जैसे एक चरवाहा किसी भेड़ की ओर ध्यान लगाए रखता है या माता-पिता बच्चे का ध्यान रखते हैं, वैसे ही कलीसिया के अगुवे को कलीसिया के सदस्यों की बात सुनना आवश्यक है। अच्छी तरह सुनने के लिए ज़्या ज़रूरी है ?

अच्छा श्रोता बात को ध्यान से सुनता है। अगुवे के लिए बात करने वाले व्यज़्ति की ओर ही पूरा ध्यान देकर उसकी बात सुननी आवश्यक है।

अच्छा अगुआ अपना मश्विरा देता है। बोलने वाले को पता होना चाहिए कि अगुआ उसकी ओर ध्यान दे रहा है अर्थात वह सचमुच उसकी बात सुन रहा है। कलीसिया के अगुवे को स्पष्ट संकेत देना सीखना चाहिए कि वह किसी की बात पर ध्यान दे रहा है।

अच्छा अगुआ यह सुनिश्चित करता है कि वह बोलने वाले की बात समझ रहा है। अगुवे को चाहिए कि उसके समझने का उद्देश्य हो। इसका अर्थ यह है कि उसे दूसरे व्यज़्ति

के दृष्टिकोण से देखने की कोशिश करते हुए, सहानुभूति से सुनना चाहिए। अगुवे को केवल बोलने वाले का खण्डन करने के लिए ही नहीं या उसकी बातों की गलतियां देखने के लिए नहीं सुनना चाहिए। उसे किसी की बात पर ध्यान देकर अपने आपको बड़ा बनाने के लिए ही नहीं सुनना चाहिए।

अच्छा अगुआ सुनी गई बात पर सोच विचार करता है। यदि सुनने वाला दूसरे व्यक्ति के विचारों पर सोच विचार करता है, तो इससे यह पता चलता है कि उसे उसकी बात समझ आ रही है। वह कह सकता है, ''यदि मुझे समझ आ गई है, तो आपके कहने का मतलब है ...''; ''असल में आपको लगता है ...''; या ''ज़्या आप यही कहना चाहते हैं कि ... ?''

अच्छा सुनने वाला प्रश्न पूछ सकता है। अगुवे के लिए चौकस रहना आवश्यक है कि वह प्रश्न किस तरह से पूछता है, अर्थात कोमलतापूर्वक, सावधानी से, चतुराई से, अर्थात ''प्वांयट बनाने के लिए'' नहीं बल्कि समझने के लिए। तो भी, उसे बार-बार पूछना चाहिए। समझने के लिए पूछने से, वह यह दिखा रहा होगा कि जो व्यक्ति बात कर रहा है वह उसमें दिलचस्पी ले रहा है, और उसकी बात अच्छी तरह से समझना चाहता है।

अच्छा सुनने वाला जानता है कि बात को संक्षेप में कैसे कहना है। तथ्यों को स्पष्ट पाने के लिए, अगुवे को चाहिए कि उन मुज़्य बातों के लिए मुज़्य बातों और कारणों को देखें। अन्त में बातचीत को वह संक्षिप्त करे या न, लेकिन उसे मुज़्य विचारों को मन में रखना आवश्यक है।

वह निर्णय लेना टाल देता है। अगुवे को सुनने वाले की बात को सही या गलत कहने का तब तक निर्णय नहीं लेना चाहिए जब तक वह अपनी बात पूरी न कर ले और सुनने वाला स्पष्ट न हो कि उसे पूरी समझ आ गई है, और उसे यकीन है कि उसके पास सब तथ्य (आवश्यक नहीं कि जो बात एक व्यक्ति कहता है उसमें सब तथ्य हों) हैं। कई बार लोग एक बात ही सुनते हैं और उनका मन उन तथ्यों की ओर चला जाता है जिससे उस विचार का खण्ड हो जाता है और कहने वाला अपनी बात पूरी नहीं कह पाता।

वह भावनाएं व्यक्त करने के लिए सुनता है। अगुवे को इस बात में चौकस रहना चाहिए कि जो बात दूसरा व्यक्ति कह रहा है वह उसी को सुने और उसका अर्थ न निकाले। विशेषकर उसे बोलने वाले के उद्देश्य बताने से बचना चाहिए। उसे शब्दों, संकेतों और हाव भाव में अन्तर करने वाला होना चाहिए ताकि उसको बोलने वाले की भावनाएं समझ आ जाएं। एक अर्थ में उसे *न* कही गई बात सुनने में सक्षम होना चाहिए। हो सकता है कि बोलने वाला कुछ महत्वहीन बात कह रहा हो, लेकिन वह उसे कहे इस ढंग से कि अच्छा सुनने वाला उसे यह कहते सुने, ''मैं ठेस पहुंचा रहा हूं; मेरी सहायता करो!'' फिर उसे उपयुक्त ढंग से प्रतिक्रिया देनी चाहिए। कुछ मामलों में हो सकता है कि बोलने वाला शब्दों को बड़े नाप तोल कर बोल रहा हो, लेकिन उसके हावभाव से उसके मन की बात पता चल रही हो। फिर तो, ऐल्डर के लिए शब्दों के साथ-साथ शब्दों के पीछे की भावनाओं को भी समझना चाहिए।

अच्छा सुनने वाला सावधानी से उज़र देता है। अगुवे को चौकस रहना चाहिए कि वह

दूसरे व्यज़्ति की बात सुनने के बाद ज़्या कहता है। जल्दबाजी में दिया गया उज़र, मज़ाक, हिंसात्मक, असहमति, या किसी भी प्रकार की ऐसी प्रतिक्रिया जिससे यह लगता हो कि दूसरा व्यज़्ति मूर्ख या दुष्ट है बातचीत को उसी समय बंद कर सकता है और हो सकता है कि इससे भविष्य में सज़्प्रेषण या संवाद सज़्भव ही न हो। जब बोलने वाले की बातों से परमेश्वर के मार्ग की अज्ञानता या उससे मानने में असफलता लगे, तब भी उसे अस्वीकार करने का जवाब देने से पहले सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। ऐसी समस्या के निपटारे के अच्छे ढंग के लिए बुद्धि सुझाव दे सकती है।

यदि कलीसिया का अगुआ अच्छी तरह सुनना न सीखे तो? शिकायत करने वाले या अपनी समस्याओं को उसके पास लाने वालों के दृष्टिकोण से, यदि अगुआ सुनने की कला बढ़ा नहीं पाता, तो यह एक ऐसी समस्या जो अपने आप ही खत्म हो जाएगी! अर्थात लोग उसके पास अपनी समस्याएं लाना बंद कर देंगे! यदि दूसरे लोग अपनी समस्याओं को उसके साथ साझा नहीं करते, तो अगुआई करने की उसकी योग्यता में रुकावट पड़ेगी।

चर्चा करने की कला

कलीसिया के अगुओं की सफलता आम तौर पर इस बात पर निर्भर करती है कि वह छोटे-छोटे समूहों में चर्चा में अपनी बात किस प्रकार कहते हैं। बातचीत के ऐसे अवसर स्थानीय कलीसिया के जीवन में, ऐल्डरों की मीटिंग, ऐल्डरों और डीकनों की मीटिंगें, बिज़नेस मीटिंगों और कलीसिया के अगुओं द्वारा कलीसिया के काम से सज़्बन्धित एक या अधिक प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई विशेष सभाओं में मिलते हैं।

अगुओं को छोटे समूहों में चर्चा का इस्तेमाल कब करना चाहिए?

बेशक संवाद के इस ढंग के लाभ हैं, परन्तु आत्मिक सच्चाई की खोज के लिए या ''सही'' और ''गलत'' की पहचान करने के लिए चर्चाएं सबसे अच्छा ढंग नहीं होती। चर्चाओं का लाभ सबसे ज़्यादा तभी होता है जब वे किए जाने वाले काम का ''ढंग और माध्यम'' बन जाती हैं, अर्थात जब पवित्र शास्त्र अन्तिम लक्ष्य ठहराता है और चर्चाएं इसी बात पर केन्द्रित होती हैं कि उस लक्ष्य को पाने के लिए मण्डली अपने संसाधनों का उपयोग अच्छे से अच्छे ढंग से कैसे कर सकती है।

अगुओं को छोटे समूहों में चर्चा ज़्यों करनी चाहिए?

उपयोगिता के दायरे में ढंगों के लिए छोटे समूह में की गई चर्चा लाभदायक होती है। जब ऐल्डर किसी समूह के साथ कोई चर्चा करने की इच्छा का संकेत देते हैं, तो वे उस समूह के सदस्यों को यह बताते हैं कि उनकी नज़र में उनका कितना महत्व है। वे अगुआई करने की भागीदारी की शैली का इस्तेमाल करते हैं जिसकी सिफारिश हर कोई करता है। इस चर्चा के बाद लिए जाने वाले निर्णय अधिकतर मण्डली की सर्वसज़्मति को दिखाते हैं और प्रबन्धकीय निर्णयों के मुकाबले सामर्थ से लिए जाते हैं। चर्चा में भाग लेते हुए, अगुवे

दूसरे सदस्यों के बराबर अपने विचारों को बता सकते हैं। मण्डली के सामने खड़े होने से यह सुझाव मिलता है कि अगुवे मण्डली से ऊपर हैं। लोगों को अज़्सर ऐसे निर्णय पसन्द नहीं आते। हो सकता है कि उनके बीच में उनके जैसे बनकर रहने वाले अगुओं की बात वे मान जाएं और उनकी सुनने को तैयार हो जाएं।

छोटे समूहों में होने वाली चर्चा की सफलता में सहायता के लिए अगुवे ज़्या कर सकते हैं?

अगुओं को चाहिए कि चर्चा का लक्ष्य स्पष्ट कर दें। किसी भी प्रकार की चर्चा में लक्ष्य अर्थात उद्देश्य होना आवश्यक है। चर्चा में भाग लेने वालों को उस लक्ष्य की समझ होनी चाहिए और यह कि वे उससे सहमत हों। लक्ष्य *इकट्ठे हुए समूह* द्वारा सामान्य उद्देश्य को पूरा करने का सबसे अच्छा ढंग ढूंढ़ना होना चाहिए।

अगुओं को अच्छे विचारों को उत्साहित करना चाहिए। वे चर्चा में अच्छे विचारों को उत्साहित करके उनकी मांग कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले उनके लिए आवश्यक होगा कि वे चर्चा में आदर्श मसीही व्यवहार चाहें। असंगत, व्यंग्य, और विपरीत विचारों को बाहर रखा जाए। अच्छे व्यवहार के लिए समूह में सब लोगों को एक दूसरे का सज़्मान करना चाहिए; हर किसी को अपनी बात कहने का अधिकार है, चाहे वह बहुमत से सहमत हो या नहीं।

अगुओं को चाहिए कि वे सबकी भागीदारी को उत्साहित करें। उन्हें देख चाहिए कि उनकी जिज़्मेदारी अपनी बात कहना नहीं बल्कि सबकी बात सुनना है। उन्हें यह समझ होनी चाहिए कि यह चर्चा कोई बहस नहीं है। लज़्बे-लज़्बे भाषण नहीं हैं और केवल एक ही व्यज़्ति की चर्चा अपर्याप्त है।

कलीसिया के अगुओं को सर्वसज़्मति मांगनी चाहिए। उन्हें समझना चाहिए कि जब चर्चा करने वाले समूह किसी नीति का निर्णय लेते हैं, तो वे निर्णय बहुमत से नहीं बल्कि सर्वसज़्मति से लिए जाने चाहिए। उन्हें इस बात का अहसास होना चाहिए कि ऐसे समूहों के सफलतापूर्वक कार्य करने का सार समझौता करने को तैयार होना या सबके मानने योग्य कोई ऐसा निर्णय लेना होता है।

अगुओं को हुनर विकसित करने चाहिए। किसी चर्चा में सफलतापूर्वक भाग लेने के लिए अगुओं को किस हुनर की आवश्यकता पड़ती है? नीचे दी गई सूची में कुछ लाभदायक सुझाव मिलते हैं:

1. जब लगे कि चर्चा गर्म हो रही है और उनके ही विरुद्ध जा रही है तो भी मसीहियों की तरह काम करते रहने की योग्यता।
2. यह अन्तर करने की योग्यता कि मसीही धर्म के लिए ज़्या आवश्यक है और ज़्या नहीं – अर्थात यह विश्वास की बात है या विचार की, और विचार की बात से सहमत होने को तैयार होने के बावजूद विश्वास में बनें रहना।
3. दूसरों की उनके गुणों और विचारों और किसी विषय पर उनकी बात सुनने की

निष्कपट इच्छा के लिए सच्चे मन से उनकी सराहना करना।

4. यह ध्यान रखना कि समूह में सब लोग हर सदस्य की सुनें, और हिचकिचाने वाले या शरमाने वाले सदस्यों को चर्चा में लाने की योग्यता।
5. निष्कपट ढंग से काम करने की समझ अर्थात ऐसी समझ जिसमें सबको बोलने का बराबर अधिकार दिया जाए।
6. यह विश्वास कि अच्छे निर्णय अज़्सर एक व्यज़्ति या छोटे समूह के बजाय लोगों द्वारा इकट्ठे होकर लिए जाते हैं।
7. संक्षेप में, परन्तु स्पष्ट ढंग से, चर्चा का लक्ष्य या उद्देश्य बताने की योग्यता।
8. सावधानी से सुनने अर्थात हर बात ध्यान से सुनने और उसे दूसरे शज़्दों में कहने, संक्षेप में कहने और दूसरों को समझाने की योग्यता।
9. बिना धमकाए, बिना अधिकार जताए परन्तु सबकी स्वीकृति के योग्य कुछ शज़्दों में विचार प्रस्तुत करने की योग्यता।
10. दिए गए प्रस्तावों की कमियों और उनकी समस्याओं को देखने अर्थात न केवल दूसरों के विचारों को ही बल्कि उनके सुझावों को भी समझने की योग्यता।
11. चर्चा को पटरी पर रखने और लक्ष्य की ओर ले जाने की योग्यता, जिसमें सबकी बात संक्षेप में बताना, सर्वसज़्मति से लिए जाने वाले निर्णय या उस अवसर पर किस बात पर सहमति नहीं हो सकती और फिर यह सुझाव देना कि यह चर्चा कहां तक जानी चाहिए।
12. चर्चा को समाप्त करने की योग्यता: यह अंदाजा लगाना कि चर्चा कब ''वहां तक जहां जा सकती है'' गई है, और/या सर्वसज़्मति कब हुई, यह कहने के योग्य होना कि उसमें से ज़्या निकला है या समाप्ति करते हुए सर्वसज़्मति को संतोषजनक ढंग से कहना।

सार्वजनिक संवाद की कला

कलीसिया के अगुओं में पॉलिसी को छोटे समूहों में सुनने और उस पर चर्चा करने वाले होने के अलावा ज़ुबानी और लिखती ढंग से मण्डली से संवाद करना भी आना चाहिए।

संवाद कितना हो

सार्वजनिक संवाद होता रहना चाहिए। जितना संवाद होगा उतना ही अच्छा है। अगुआई करने वालों में स्पष्टवादिता होनी चाहिए, जिससे कलीसिया के अगुवे सदस्यों को हर समय ''जानकारी'' देते रहें। एक ऐल्डर का कहना था कि जिस मण्डली के साथ वह काम करता था उसके ऐल्डरों को लगता था कि जब तक मण्डली को किसी काम के बारे में पांच बार नहीं बताया जाता तब तक मण्डली को उसके बारे में पता नहीं चलता।

सब बातें ''सार्वजनिक'' नहीं होनी चाहिए। अगुओं के अधिकार से कई साधन हैं जिनका इस्तेमाल किया जा सकता है:

1. किसी भी समय अकेले में या सभी ऐल्डरों के साथ बात करने का खुला निमन्त्रण।
2. सदस्यों को इस बात से अवगत कराने के लिए कि किस बात पर विचार किया जा रहा है, उन्हें प्रश्न पूछने का अवसर देने के लिए, उन्हें विचाराधीन मामलों पर अपने विचार देने के लिए, और उनसे सुझाव लेने के लिए सदस्यों की मीटिंगें बुलाई जाएं।
3. सार्वजनिक घोषणाएं, जो विशेष तौर पर स्वयं ऐल्डरों द्वारा की गई हों।
4. चर्च बुलेटिन।
5. सदस्यों के नाम पत्र।
6. कमेटी की रिपोर्टों, कैशियर की रिपोर्टों, बिज़नेस मीटिंग में होने वाली बातों का ज़्यौरा आदि की कापियां।
7. किसी बड़े कार्यक्रम (जैसे, किसी बिल्डिंग का कार्यक्रम) पर विचार करने के समय विशेष पुस्तकें - उदाहरण के लिए।
8. सदस्यों से मिलने के लिए, न केवल ऐल्डरों द्वारा उन्हें अच्छी तरह जानने के अवसरों के रूप में बल्कि सदस्यों द्वारा भी उनसे कोई प्रश्न पूछने के अवसर के रूप में इस्तेमाल किया जाए।

संवाद किस तरह का हो

सार्वजनिक संवाद जहां तक सम्भव हो सकारात्मक होना चाहिए (स्पष्टतया, यह हमेशा सकारात्मक हो ऐसा सम्भव नहीं है)। संवाद का ढंग भी महत्वपूर्ण है।

आम तौर पर किसी बात को कहने के लिए दो ढंगों का इस्तेमाल होता है - सकारात्मक या नकारात्मक (उदाहरण के लिए, ''गिलास आधा खाली है'' या ''गिलास आधा भरा हुआ है'')। अगुओं को चाहिए कि जहां तक सम्भव हो सकारात्मक ढंग ही चुनें। एक पुरानी कहावत है, ''यदि आप किसी के बारे में अच्छा नहीं कह सकते, तो कुछ भी न कहें।'' कलीसिया के सम्बन्ध में हमारी सार्वजनिक घोषणाओं के बारे में यह नीति सबसे अच्छी है। लगातार नकारात्मक घोषणाओं की खुराक से ''दिल दुखी'' हो सकता है और अन्ततः इसका परिणाम आत्मिक कुपोषण होता है। नीचे दिखाए गए चार्ट में एक ही स्थिति को मानने के नकारात्मक और सकारात्मक ढंगों की तुलना करें।

कलीसिया के अगुवे पौलुस से एक सबक ले सकते हैं, जो कलीसियाओं में पाई जाने वाली समस्याओं से निपटने में कभी असफल नहीं हुआ। जिनके नाम उसने पत्रियां लिखीं बल्कि अक्सर वह कुछ इस तरह की सकारात्मक बातों से आरम्भ करता था, जैसे कि ''मैं तुम सबके लिए ... अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं'' (देखिए रोमियों 1:8; 1 कुरिन्थियों 1:4; फिलिप्पियों 1:3; कुलुस्सियों 1:3; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3)।

सारांश

सफल लीडरशिप की एक कुंजी प्रभावकारी संवाद है। अब्राहाम लिंकन, फ्रेंकलिन डी. रूसवेल्ट और विंसटन चर्चिल को महान अगुओं के रूप में याद किया जाता है और ये

सब निपुण संवादकार थे। यीशु संवाद की अपनी निपुणता के कारण, कुछ हद तक एक महान अगुआ है। उसे ''परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया'' (यूहन्ना 3:2) माना जाता था। उसे पकड़ने के लिए आए अधिकारी यह कहते हुए लौट गए थे कि ''किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं'' (यूहन्ना 7:46)।

इसी प्रकार, कलीसिया के अगुओं को भी प्रज़ावशाली ढंग से संवाद करना आवश्यक है, और इसके लिए ज़रूरी है कि वे ध्यान से सुनें, समूहों को फलदायक चर्चा के लिए उत्साहित करें और उसमें भाग लें, यह सुनिश्चित करें कि सदस्यों से उनकी बातचीत होती रहे, और वह भी सकारात्मक ढंग से। संप्रेषण की इन कलाओं पर ध्यान दिए बिना, कलीसिया के अगुवे बहुत अच्छे लोग हो सकते हैं, लेकिन अच्छे अगुवे नहीं।

मैंने किसी आदमी के बारे में पढ़ा जिसने हमारे मोहल्ले में कोशिश की कि शज़्ति किसके पास होनी चाहिए मैंने ध्यान दिया कि वह हैरान था कि ''काम करने वाले'' अर्थात आविष्कारक, इंजीनियर, और डॉज़्टर शज़्तिशाली हैं या ''बातें करने वाले'' अधिक शज़्तिशाली। काफी खोज के बाद, उसने निष्कर्ष निकाला कि ''बातें करने वालों'' का प्रभाव अधिक है। यदि किसी समाज की अगुआई करनी हो तो योग्य संवादकार होना आवश्यक है। इसी प्रकार कलीसिया की अगुआई करने के लिए, एक संवादकार के रूप में अपनी योग्यताओं को बढ़ाना आवश्यक है। अपने चरित्र के अलावा, कलीसिया की अगुआई के लिए यह सबसे आवश्यक औजार है।

मण्डली की स्थितियों में सज़्बोधित करने के ढंग

नकारात्मक	सकरात्मक
1. ''हमारे सामने एक समस्या है।''	''हमारे सामने एक चुनौती है।''
2. ''हमारे चंदे से हमारे बजट की केवल आधी आवश्यकताएं पूरा होती हैं।''	''बजट को पूरा करने के लिए आधा चंदा आ चुका है!''
3. ''हमारे कुछ सदस्य अविश्वासी हैं।''	''हमारे अधिकतर सदस्य विश्वासी हैं!''
4. ''हम उतना नहीं कर रहे जितना हमें करना चाहिए।''	''मुझे यकीन है कि हम काफी सुधार कर रहे हैं और आगे भी करेंगे।''
5. ''हमें और सिखाने वालों की आवश्यकता है।''	''कार्यक्रम है जिसमें हर उम्र के लोगों के लिए अच्छी कलासें होती हैं, और हम हर ज़्लास के लिए अच्छा टीचर ढूंढ़ेगे।''
6. ''कल रात विजिट के लिए केवल छह लोग आए।''	''कल शाम विजिट के लिए छह लोग आए जो कि यीशु द्वारा चुने गए बारह प्रेरितों का आधा बनते हैं।''
7. ''यदि बाहर का कोई व्यक्ति यहां आया है, तो हमें खुशी है कि आप हमारे बीच में हैं।''	''हम बाहर से आने वाले सब लोगों का स्वागत करना चाहते हैं।'' या ''यदि आप हमारे साथ पहली बार आए हैं, तो हमें आपके आने की खुशी है, और आशा करते हैं कि आप फिर आएंगे।''
8. ''आज रात हमारी हाज़री बहुत कम है।''	''हम आपके आने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।''
9. ''मुझे पैसे मांगने के लिए बार - बार सामने आना अच्छा नहीं लगता।''	''हमारे पास उस धन को जो उसने हमें सौंपा है, मसीह को लौटाकर अपना प्रेम उसके प्रति दिखाने का शानदार अवसर है।''